

# विकिरण के जोखिम का आकलन

**वैज्ञानिक** यह समझने की कोशिश कर रहे हैं कि फुकुशिमा से निकले रेडियोधर्मी विकिरण के क्या असर हो सकते हैं। वैसे अभी यह पक्के तौर पर नहीं कहा जा सकता कि इस विकिरण के कितने व क्या असर होंगे। मगर वैज्ञानिकों का मानना है कि ये असर बहुत ज्यादा होने की संभावना नहीं है।

फुकुशिमा संयंत्र से निकली रेडियोसक्रिय वाष्प काफी दूर-दूर तक फैली है और प्रशांत सागर की हवाओं के साथ आगे बढ़ी है। वॉशिंगटन की पेसिफिक नॉर्थवेस्ट नेशनल लेबोरेटरी ने फुकुशिमा के विकिरण को पकड़ा है। प्रयोगशाला के टेड बॉयर का कहना है कि फुकुशिमा से निकले रेडियोसक्रिय की जो थोड़ी-सी मात्रा वातावरण में रहेगी वह भी खतरनाक आयोडीन, सीज़ियम, टेलुरियम, ज़ीनॉन, और लेन्थेनम संयुक्त राज्य अमेरिका तक पहुंचे हैं मगर अभी इनकी मात्रा इतनी नहीं है कि ये स्वास्थ्य के लिए कोई खतरा पैदा करें।

जापान सरकार ने फुकुशिमा व आसपास के ज़िलों में समुद्री पानी में तथा खाद्य पदार्थों व पेयजल में रेडियोसक्रियता बढ़ने की पुष्टि की है। कई स्थानों पर दूध व पत्तेदार सब्जियों और पेयजल में आयोडीन-131 और सीज़ियम-

137 की मिलावट सुरक्षित सीमा से अधिक पाई गई है। अधिकारियों ने फुकुशिमा व तीन पड़ोसी ज़िलों से दूध व अन्य पदार्थों के बाहर जाने पर रोक लगा दी है।

आयोडीन-131 की अर्धायु मात्र 8 दिन होती है मगर यह थायरॉइड के कैंसर का कारण बन सकती है। यह तत्काल चिंता का मुख्य विषय है। वैसे देखा जाए तो जल्दी ही वातावरण में आयोडीन-131 नहीं बचेगी। दूसरी ओर सीज़ियम-137 की अर्धायु 30 वर्ष के आसपास है और यह वातावरण में लंबे समय तक बना रहेगा। यह भी कैंसरकारी है। ऐसा माना जा रहा है कि कई बरसों बाद भी रेडियोसक्रियता हो सकती है क्योंकि प्रभावित आबादी बहुत बड़ी होगी।

चिंता का एक प्रमुख विषय वे कर्मचारी हैं जो संयंत्र की मरम्मत में भिड़े हुए हैं। सरकार ने कर्मचारियों के लिए स्वीकृत 100 मिलीसीवर्ट्स प्रति वर्ष की सीमा को बढ़ाकर 250 मिलीसीवर्ट्स कर दिया है। ऐसा सिर्फ इसलिए किया गया है ताकि ये कर्मचारी 'वैध' ढंग से काम करते रहें।  
(स्रोत फीचर्स)